1967F Incomplete work of Todarmal Ji

In *Atm Dharm*, special issue for Todarmal Ji March 1967

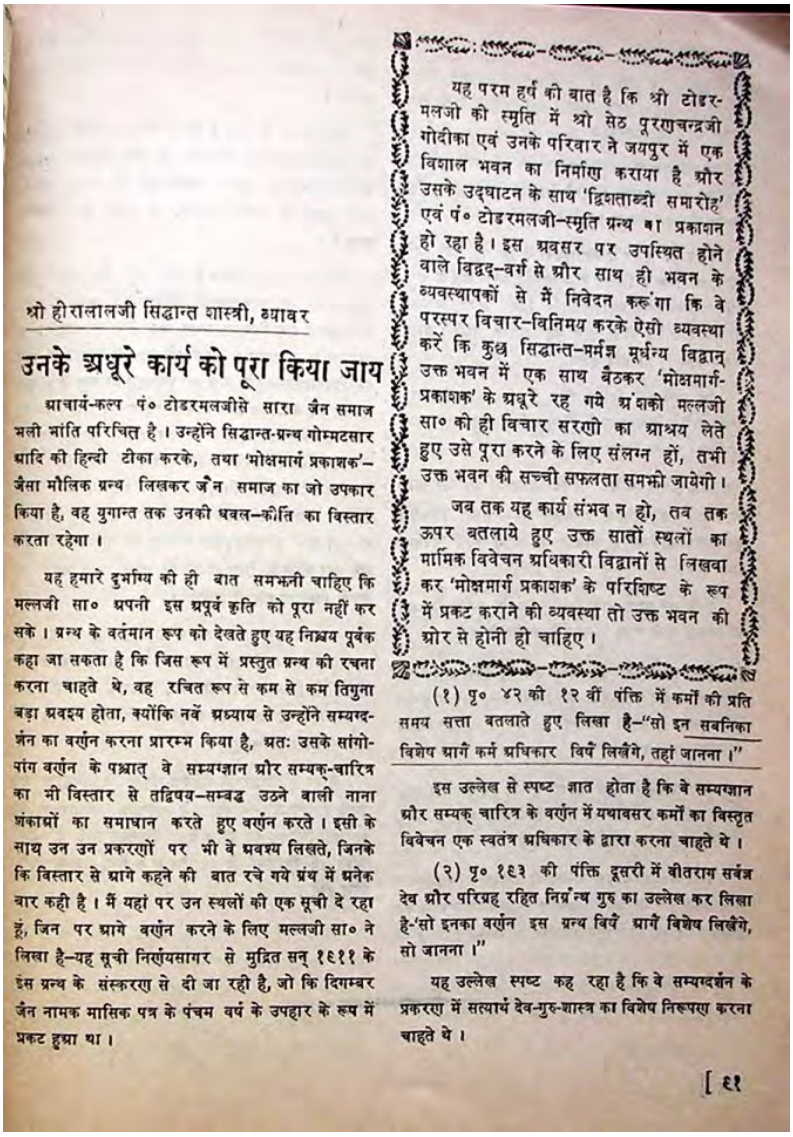

श्री हीरालालजी सिद्धान्त शास्त्री, ब्यावर

उनके अधूरे कार्य को पूरा किया जाय

आचार्य-कल्प पं० टोडरमलजीसे सारा जैन समाज भली भांति परिचित है। उन्होंने सिद्धान्त-ग्रन्थ गोम्मटसार आदि की हिन्दी टीका करके, तथा 'मोक्षमार्ग प्रकाशक'–जैसा मौलिक ग्रन्थ लिखकर जैन समाज का जो उपकार किया है, वह युगान्त तक उनकी धवल–कीर्ति का विस्तार करता रहेगा।

यह हमारे दुर्भाग्य की ही बात समझनी चाहिए कि मल्लजी सा० अपनी इस अपूर्व कृति को पूरा नहीं कर सके। ग्रन्थ के वर्तमान रूप को देखते हुए यह निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि जिस रूप में प्रस्तुत ग्रन्थ की रचना करना चाहते थे, वह रचित रूप से कम से कम तिगुना बड़ा अवश्य होता, क्योंकि नवें अध्याय से उन्होंने सम्यग्दर्शन का वर्णन करना प्रारम्भ किया है, अतः उसके सांगोपांग वर्णन के पश्चात् वे सम्यग्ज्ञान और सम्यक्-चारित्र का भी विस्तार से तद्विषय–सम्बद्ध उठने वाली नाना शंकाओं का समाधान करते हुए वर्णन करते। इसी के साथ उन उन प्रकरणों पर भी वे अवश्य लिखते, जिनके कि विस्तार से आगे कहने की बात रचे गये ग्रंथ में अनेक बार कही है। मैं यहां पर उन स्थलों की एक सूची दे रहा हूं, जिन पर आगे वर्णन करने के लिए मल्लजी सा० ने लिखा है–यह सूची निर्णयसागर से मुद्रित सन् १९११ के इस ग्रन्थ के संस्करण से दी जा रही है, जो कि दिगम्बर जैन नामक मासिक पत्र के पंचम वर्ष के उपहार के रूप में प्रकट हुआ था।

यह परम हर्ष की बात है कि श्री टोडरमलजी की स्मृति में श्री सेठ पूरणचन्द्रजी गोदीका एवं उनके परिवार ने जयपुर में एक विशाल भवन का निर्माण कराया है और उसके उद्घाटन के साथ 'द्विशताब्दी समारोह' एवं पं० टोडरमलजी–स्मृति ग्रन्थ का प्रकाशन हो रहा है। इस अवसर पर उपस्थित होने वाले विद्वद्–वर्ग से और साथ ही भवन के व्यवस्थापकों से मैं निवेदन करूंगा कि वे परस्पर विचार–विनिमय करके ऐसी व्यवस्था करें कि कुछ सिद्धान्त–मर्मज्ञ मूर्धन्य विद्वान् उक्त भवन में एक साथ बैठकर 'मोक्षमार्ग-प्रकाशक' के अधूरे रह गये अंशको मल्लजी सा० की ही विचार सरणी का आश्रय लेते हुए उसे पूरा करने के लिए संलग्न हों, तभी उक्त भवन की सच्ची सफलता समझी जायेगी।

जब तक यह कार्य संभव न हो, तब तक ऊपर बतलाये हुए उक्त सातों स्थलों का मार्मिक विवेचन अधिकारी विद्वानों से लिखवा कर 'मोक्षमार्ग प्रकाशक' के परिशिष्ट के रूप में प्रकट कराने की व्यवस्था तो उक्त भवन की ओर से होनी ही चाहिए।

(१) पृ० ४२ की १२ वीं पंक्ति में कर्मों की प्रति समय सत्ता बतलाते हुए लिखा है–"सो इन सबनिका विशेष आगैं कर्म अधिकार विषैं लिखैंगे, तहां जानना।"

इस उल्लेख से स्पष्ट ज्ञात होता है कि वे सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र के वर्णन में यथावसर कर्मों का विस्तृत विवेचन एक स्वतंत्र अधिकार के द्वारा करना चाहते थे।

(२) पृ० १९३ की पंक्ति दूसरी में वीतराग सर्वज्ञ देव और परिग्रह रहित निर्ग्रन्थ गुरु का उल्लेख कर लिखा है-'सो इनका वर्णन इस ग्रन्थ विषैं आगैं विशेष लिखैंगे, सो जानना।"

यह उल्लेख स्पष्ट कह रहा है कि वे सम्यग्दर्शन के प्रकरण में सत्यार्थ देव-गुरु-शास्त्र का विशेष निरूपण करना चाहते थे।

(३) पृ० २२३ पर सम्यग्दर्शन के स्वरूप की चर्चा करते हुए १५ वीं पंक्ति में वे लिखते हैं—"तातैं सम्यक् श्रद्धान का यह स्वरूप नाहीं। सांचा स्वरूप है सो आगैं वर्णन करेंगे, सो जानना।"

इस उल्लेख से ज्ञात होता है कि वे सम्यग्दर्शन के प्रकरण में 'सत्यार्थ तत्त्वार्थ-श्रद्धान' क्या है, इसका विस्तृत विवेचन करना चाहते थे।

(४) पृ० २२४ में श्वेताम्बरों के मत की चर्चा करते हुए प्रथम पंक्ति से लिखते हैं—"और उनका मत के अनुसारि गृहस्थादिकैं महाव्रत आदि बिना अंगीकार किएं भी सम्यक्चारित्र हो है, तातैं यह स्वरूप नाहीं। सांचा स्वरूप अन्य है, सो आगैं कहेंगे।"

इस उल्लेख से विदित होता है कि मल्लजी सा० सम्यक्चारित्र के प्रकरण में श्वेताम्बरीय उक्त मान्यताओं पर विशद प्रकाश डालने वाले थे।

(५) पृ० २३८ पर पांचवें अध्याय का उपसंहार करते हुए ६ वीं पंक्ति में वे कहते हैं—"सांचा जिनधर्म का स्वरूप आगैं कहैं हैं, ताकरि मोक्षमार्ग विषै प्रवर्तना योग्य है।"

इससे यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि वे 'सच्चे जिनधर्म का स्वरूप' आगे बहुत विस्तार से कहनेवाले थे।

(६) पृ० ३३५ पर द्रव्यलिंगी मुनिकी प्रवृत्ति का वर्णन करते हुए पंक्ति १७ में लिखा है—"सो अभिप्राय विषै वासना है, ताका फल लागै है। सो इसका विशेष व्याख्यान आगैं करेंगे।"

इस उल्लेख से ज्ञात होता है कि पंडित जी सा० सम्यक्चारित्र के प्रकरण में 'द्रव्यलिंगी मुनि के मनोभावों का सूक्ष्म चित्रण' करना चाहते थे।

(७) पृ० ४५८ पर सम्यक्त्वी जीव के सांसारिक कार्य करते हुए भी उसके सत्यार्थ श्रद्धान बने रहने का वर्णन करते हुए परा दूसरे की पंक्ति ५ में वे लिखते हैं—"विषयसेवनादि कार्य वा क्रोधादि कार्य करै है, तथापि तिस श्रद्धान का बाकै नाश न हो है। याका विशेष निर्णय आगैं करेंगे।"

इस उल्लेख से सिद्ध है कि वे अविरत सम्यग्दृष्टि के उन मनोगत भावों का विस्तार से आगे निरूपण करना चाहते थे जिन्हें कि वह हेय जानते हुए भी चारित्र मोहके प्रबल उदय के कारण छोड़ने में अपने को असमर्थ पाता है।

यह परम हर्ष की बात है कि श्री टोडरमलजी की स्मृति में श्री सेठ पूरणचन्द्रजी गोदीका एवं उनके परिवार ने जयपुर में एक विशाल भवन का निर्माण कराया है और उसके उद्घाटन के साथ 'द्विशताब्दी समारोह' एवं पं० टोडरमलज–स्मृति ग्रन्थ का प्रकाशन हो रहा है। इस अवसर पर उपस्थित होने वाले विद्वद्-वर्ग से और साथ ही भवन के व्यवस्थापकों से मैं निवेदन करूंगा कि वे परस्पर विचार-विनिमय करके ऐसी व्यवस्था करें कि कुछ सिद्धान्त-मर्मज्ञ मूर्धन्य विद्वान् उक्त भवन में एक साथ बैठकर 'मोक्षमार्ग-प्रकाशक' के अधूरे रह गये अंशको मल्लजी सा० की ही विचार सरणी का आश्रय लेते हुए उसे पूरा करने के लिए संलग्न हों, तभी उक्त भवन की सच्ची सफलता समझी जायेगी।

जब तक यह कार्य संभव न हो, तब तक ऊपर बतलाये हुए उक्त सातों स्थलों का मार्मिक विवेचन अधिकारी विद्वानों से लिखवा कर 'मोक्षमार्ग प्रकाशक' के परिशिष्ट के रूप में प्रकट कराने की व्यवस्था तो उक्त भवन की ओर से होनी ही चाहिए।

आशा है 'टोडरमल-स्मारक-भवन' के निर्माता एवं उनके द्विशताब्दी समारोह' के प्रस्तोता महानुभाव मेरे इस नम्र निवेदन पर ध्यान देकर पंडितजी सा० के अधूरे 'मोक्षमार्ग प्रकाशक' को पूरा कराने के लिए अवश्य प्रयत्नशील होंगे।